Impact Factor : 7.705

ISSN : 2395 - 5104

शब्दार्णव Shabdarnav

International Peer Reviewed Refereed Journal of Multidisciplinary Research

Year-11 Vol.-21, Part-V January-June, 2025

Scientific Research
Educational Research
Technological Research
Literary Research
Behavioral Research

Editor in Chief
DR. RAMKESHWAR TIWARI

Executive Editors
DR. KUMAR MRITUNJAY RAKESH
MR. RAGHWENDRA PANDEY

Published by
SAMNVAY FOUNDATION
Mujaffarpur, Bihar

शब्दार्णव *An International Peer Reviewed Refereed Journal of Multidisciplinary Research*
वर्ष–11, अंक–21, भाग–5, जनवरी–जून, 2025। ISSN: 2395-5104। *Impact Factor : 7.705*

अथर्ववेदीय औषधीय द्रव्यों का समाजशास्त्रीय अनुशीलन

डॉ. कंवर सिंह
सह आचार्य, श्री वेंकटेश्वर महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

ओषधियाँ मानव जीवन के लिए अमृत हैं। अनेक रूप से वे मानव को लाभ पहुंचाती हैं। काष्ठ, फल, फूल आदि के द्वारा वे मानवजाति के आच्छादन, भरण-पोषण के निमित्त हैं, वहीं मानव के लिए आरोग्यकर भैषज्य प्रदान कर उनका दुःख भी दूर करती हैं। क्योंकि कहा गया है कि – **तत् ते कृणोमि भेषजं सुभेषजम्।** अथर्ववेद २/३/१

अथर्ववेद में ओषधियों का महत्त्व प्रतिपादित किया गया है। ये ओषधियाँ देवों से भी तीन युग पहले उत्पन्न हुई हैं। ओषधियां संसार में सैकड़ों और सहस्रों स्थानों पर उत्पन्न होती हैं। ओषधियाँ मानवमात्र के दुःख दूर करती हैं और उन्हें पार लगाती हैं। ओषधियाँ मानवमात्र की रक्षा करती हैं और उनको सरंक्षण प्रदान करती हैं, अतः वे 'मातरः' अर्थात् माता के तुल्य हैं। ओषधियाँ विविध दोषों को दूर करती हैं और रोगों से मुक्त करती हैं। ऐसी ओषधियों के संग्रह करने वाले को भिषग् या वैद्य कहते हैं। ओषधियाँ शरीर की सभी न्यूनताओं को दूर करती हैं। ओषधियां शरीर के प्रत्येक अंग में अपना प्रभाव पहुँचा कर उनमें से रोगों को बाहर निकालती हैं। ओषधियाँ जिसके शरीर में प्रवेश कर जाती हैं, वह नीरोग हो जाता है। ओषधियाँ मनुष्य और पशु सभी को नीरोग बनाती हैं। ओषधियाँ चार प्रकार की हैं - फलयुक्त, फलरहित, फूलयुक्त, फूलरहित। ओषधियाँ मनुष्य को शक्ति, ऊर्जा और उत्साह देती हैं, जिससे मनुष्य का शरीर और मन ओजस्वी एवं वर्चस्वी होता है। ओषधियाँ शरीर के अन्दर से रोगों को निकालती हैं, ये रोगों का प्रवेश रोकती हैं और शरीर के सामर्थ्य को अक्षुण्ण रखती हैं। अथर्ववेद ओषधियों के लिए आकर ग्रन्थ है। इसमें अनेक सूक्त ओषधियों के गुण धर्मों का विस्तृत विवेचन करते हैं। इसमें विवेचनात्मक, व्याख्यात्म, तुलनात्मक पद्धति का अनुसरण करके अथर्ववेदीय औषधियों का प्रतिपादन प्रस्तुत शोधपत्र में अभिप्रेत है।

कूट शब्द : वेद, भेषज, वनस्पति, लता, वीरुध, सूक्त, मन्त्र, स्वधा, सोम, सहस्रपर्णी, वितन्त्री।

ओषधियाँ जीवनरक्षक हैं। चिकित्सा के प्रमुख साधन हैं। इनके द्वारा विभिन्न रोगों को दूर किया जाता है, अतः इन्हें भेषज और सुभेषज कहा गया है।[1] ओषधियों के रस से अनेक दवाएँ बनायी जाती हैं। इनसे रोगों की चिकित्सा होती है। ये रस आयुवर्धक बताए गए हैं।[22] ओषधियों की उत्पत्ति और वृद्धि का आधार वर्षा है, अतः द्युलोक को ओषधियों का पिता कहा गया है और भूमि पर उत्पन्न होने के कारण भूमि को माता कहा है। समुद्री जल वर्षा का कारण है और समुद्र में नानाप्रकार की ओषधियों होती हैं, अतः समुद्र को ओषधियों का मूल कहा गया है।[3]

ओषधि का अर्थ : ओषधि शब्द के अनेक अर्थ दिए गए हैं। आचार्य सायण ने व्युत्पत्ति दी है - **'ओषः पाकः आसु धीयते इति ओषधयः'** जिनके फल पकते हैं, उन्हें ओषधि कहते हैं।[4] यास्क ने इसकी निरुक्ति दी है- **'ओषधयः ओषद् धयन्तीति वा। ओषत्येना धयन्तीति वा। दोषं धयन्तीति वा'** जो शरीर में शक्ति उत्पन्न कर उसे धारण करती हैं या जो दोषों को दूर करती हैं।[5] शतपथ ब्राह्मण ने भी ओषधियों को दोष नाशक कहा है।[6]

अथर्ववेद में ओषधियों के भेद : ओषधियों के मुख्य रूप से दो भेद हैं और उनके दो-दो भेद होने से चार भेद होते हैं। ओषधि के मुख्य दो भेद हैं- वनस्पति और ओषधि। वृक्षों के लिए वनस्पति शब्द है और छोटे पौधों के लिए ओषधि। ऋग्वेद में वृक्ष और वनस्पति के लिए 'वनिन्' शब्द भी आता है।[7] वनस्पति के दो भेद किए गए हैं - वनस्पति और वानस्पत्य। बड़े वृक्षों के लिए वनस्पति शब्द है। अपेक्षाकृत छोटे वृक्षों के लिए वानस्पत्य शब्द का प्रयोग किया जाता है। इसीप्रकार ओषधि के भी दो भेद किए गये हैं - ओषधि और वीरुध्। छोटे पौधे के रूप में होने वालों को ओषधि और लता गुल्म आदि के रूप में होने वालों को वीरुधू कहा जाता है। अथर्ववेद में इन चार भेदों का उल्लेख प्राप्त होता है।[8] अथर्वेद में ओषधि के लिए भेषजी शब्द का भी प्रयोग होता है।

ओषधियों का वर्गीकरण : अथर्ववेद में औषधियों का वर्गीकरण तीन प्रकार से किया गया है।[9] ये वर्गीकरण है -

रूप के आधारपर वर्गीकरण : औषधियां इन विभिन्न रंगों भी होती हैं। वभ्रु अर्थात् भूरे रंग वाली, शुक्र अर्थात् सफ़ेद रंग वाली, रोहिणी अर्थात् लाल रंग वाली, पृश्नि अर्थात् चितकबरी, असिक्नी अर्थात् नीले रंग की, कृष्णा अर्थात् काले रंग की।[10]

स्वरूप के आधार पर वर्गीकरण : प्ररतृणती अर्थात् चारों ओर फैलने वाली, स्तम्बिनी अर्थात् एक तने वाली, एकणून अर्थात् एक जड़ बाली, प्रतन्वती अर्थात् अनेक जड़ों वाली, अंशुमती अर्थात् अनेक सूक्ष्म अवयव या रेशों बाली, काण्डिनी अर्थात् पोरुओं वाली, विशाखा अर्थात् अनेक शाखाओं वाली।[11]